HIN3B14b_cours-06-2013-03-05

फोर्ट विलियम कॉलेज

- टीपू सुल्तान (असली नाम सुल्तान फतेह अली ख़ान, यूसुफ़ाबाद-बैंगलौर, 1750-1799) जब मैसूर के शासक बने तब उन्होंने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का काम शुरू किया। उन्होंने एक आम दरबार में घोषणा की- "मैं सभी काफ़िरों को मुसलमान बनाकर रहूँगा।" उसने मैसूर के गाँव-गाँव के मुस्लिम अधिकारियों के पास लिखित सूचना भिजवा दी कि, "सभी हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षा दो। जो खुशी से मुसलमान न बने उसे बलपूर्वक मुसलमान बनाओ और जो विरोध करे, उसका कत्ल करवा दो। उनकी औरतों को पकड़कर दासी बनाकर मुसलमानों में बाँट दो।" लेकिन साथ ही उन्होंने हिन्दू शासकों से अच्छे संबंध बनाने के लिए हिन्दू मन्दिरों को उपहार भी दिए। 4 मई 1799 को 48 वर्ष की आयु में कर्नाटक के श्रीरंगपट्टना में टीपू को धोखे से अंग्रेजों ने क़त्ल कर दिया। माना जाता है कि टीपू सुल्तान अपनी आख़िरी साँस तक अंग्रेज़ों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। उनकी तलवार अंगरेज़ अपने साथ ब्रिटेन ले गए। टीपू की मृत्यू के बाद सारा राज्य अंग्रेज़ों के हाथ आ गया।
- इस प्रकार अंग्रेज़ी सरकार ने टीपू सुल्तान को हराया और अपनी जड़ें मज़बूत कीं। अंग्रेज़ी सरकार के गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेजली ने ब्रिटेन की इस निर्णायक जीत की याद में 10 जुलाई सन् 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज (Fort William College) की स्थापना की। वेलेजली जब भारत आए तो उन्होंने यह महसूस किया कि कम्पनी के कर्मचारी सिर्फ एक व्यापारिक संस्था के कर्मचारी नहीं बल्कि सरकार के अधिकारी हैं। इसलिए उन्हें भारत की भाषाओं और संस्कृति की जानकारी ज़रूरी है। इस काम के लिए उन्होंने जॉन गिलक्राइस्ट (1759-1841) को अध्यक्ष बनाकर उनसे 'ओरियंटल सैमिनरी' की शुरूआत करवाई। इस संस्था में प्राच्य विद्याओं एवं भाषाओं का अध्ययन किया जाता था। इस संस्था ने संस्कृत, अरबी, फारसी, बंगला, हिन्दी तथा उर्दू आदि की हजारों किताबों का अनुवाद किया। कुछ लोगों ने इस संस्था को भारत के लोगों को बाँटने का खेल खेलने का अड्डा माना। जो भी हो इस कॉलेज ने हिन्दी-साहित्य, ब्रजभाषा साहित्य, संस्कृत-साहित्य के विकास की आधार-भूमि तैयार की। फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी भाषा का अध्ययन शुरू हुआ। जॉन गिलक्राइस्ट उर्दू, अरबी और संस्कृत के भी विद्वान थे। उन्होंने इंग्लिश-हिन्दुस्तानी डिक्सनरी, हिन्दुस्तानी ग्रैमर, दि ओरिएंटल लिंग्विस्ट नामक ग्रन्थ प्रकाशित करवाए।
- इस प्रकार यह कॉलेज ब्रिटेन के नए सिविल अधिकारियों के शिक्षण और प्रशिक्षण का केंद्र था। इस कॉलेज में सेना के जूनियर अधिकारियों को भी प्रवेश की अनुमति थी। आगे चलकर यह कॉलेज प्राचीन काल के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया, जहाँ भारतीय और ब्रिटिश विद्वान विभिन्न भारतीय भाषाओं के आधुनिकीकरण के लिए विभिन्न भाषायी शोध-योजनाओं पर मिलकर काम करते थे। लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी का निदेशक-मंडल इस संस्था को बेकार मानता था। इस काम को एक खर्चीला अनुभव माना गया। इसलिए 1806 में 'मार्केस ऑफ वेलेजली' जब इंग्लैंड लौटा तो इस संस्था को अनेक आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा।
- बाद के एक दशक के दौरान इस संस्थान ने कंपनी के सिविल अधिकारियों के परीक्षा-केंद्र के रूप में भी कार्य जारी रखा। लेकिन बाद में जब शिक्षण संस्थान के रूप में इस कॉलेज की हैसियत समाप्त कर दी गई तो इसकी ज़्यादातर किताबें और पांडुलिपियाँ 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के हिस्से में आ गईं। बाकी किताबें 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता) और 'इम्पीरियल रिकॉर्ड डिपार्टमेंट' (नेशनल आर्काइब्स

ऑफ इंडिया अर्थात राष्ट्रीय अभिलेखागार) को सौंप दी गईं। राष्ट्रीय अभिलेखागार में 742 दुर्लभ पुस्तकें और 199 पांडुलिपि हैं जिनमें साहित्यिक, ऐतिहासिक, पशुपालन, ज्योतिषशास्त्र, ऐतिहासिक यात्रा-विवरणों, भौगोलिक बायोग्राफिक और आम अभिरूचि के अन्य विषयों के अध्ययन के लिए बहुत सामग्री मिलती है।

फोर्ट विलियम कॉलेज और हिन्दी

- प्रकाशन योजना - इनमें गिल क्राइस्ट ने मध्य या विशुद्ध हिन्दुस्तानी शैली को प्राथमिकता दी जिसमें उर्दू फारसी का प्रभाव रहता था पर उसका मूल ढाँचा हिन्दी पर ही आधारित था। गिल क्राइस्ट की विशेष माँग पर 19 फरवरी सन् 1802 ई. को कॉलेज कौंसिल ने भाषा मुंशी के पद पर लल्लू जी लाल की नियुक्ति की। गिल क्राइस्ट ने हिन्दुस्तानी में पाठय पुस्तकों का अभाव देखकर प्रकाशन की एक योजना चलायी जिसके अंतर्गत सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, शकुंतला नाटक और माधवानल का ज़िक्र मिलता है।
- इस प्रकार फोर्ट विलियम कॉलेज ने हिन्दी गद्य के क्षेत्र में खड़ी बोली को जगह दिलायी और काव्य में ब्रजभाषा की जगह खड़ी बोली को अपनाने के लिए नए प्रयोगों के लिए रास्ता तैयार किया, हालाँकि खड़ी बोली को बहुत समय बाद ही काव्य में जगह मिल पायी। यह सब आधुनिकता के कारण हो पाया। स्पष्ट ही हिन्दी गद्य के नये प्रयोग फोर्ट विलियम कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. जॉन गिलक्राइस्ट द्वारा हिन्दी/हिन्दुस्तानी गद्य में लिखवाए गए लेखों के रूप में थे। इन लेखों में लल्लू लाल की रचना 'प्रेमसागर' और सदल मिश्र की रचना 'चन्द्रावती' या 'नासिकेतोपाख्यान' विशेष महत्त्वपूर्ण है। सन् 1803 ई. में लिखी गई इन दोनों ही रचनाओं की भूमिका में खड़ी बोली के आरम्भिक प्रयोग का संकेत क्रमश: यों मिलता है -
  'श्रीयुक्त गुनगाहक गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से संवत् 1860 में लल्लूजी कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वाले ने विसका सार ले यामिनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ीबोली में कह नाम प्रेमसागर धरा।'
- महत्त्व - फोर्ट विलियम कॉलेज का महत्त्व पुस्तकों के प्रकाशन भाषा सुधारों के लिए अधिक है। 26 फरवरी सन् 1804 को गिलक्राइस्ट के त्याग पत्र देने से भाषायी दृष्टि से सुधार वर्षों तक नहीं हुआ। बाद में ज़्यादातर अंग्रेज़ अधिकारी तथा विद्वान हिन्दी के महत्त्व को समझते थे फिर भी वे हिन्दी को उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे। टेलर रोयेबक, प्राइस आदि कॉलेज के परवर्ती अधिकारियों ने हिंदी-शिक्षा में कमी की ओर संकेत भी किया है। टेलर के बाद प्राइस हिन्दुस्तानी विभाग के अध्यक्ष हुए। वे खुद को हिन्दी प्रोफेसर कहते थे। वे हिन्दी और हिन्दुस्तानी में लिपि तथा शब्दों की दृष्टि से अंतर मानते थे।
- इस प्रकार यह कहा जाता है कि इस कॉलेज ने ही पहले-पहल हिन्दी खड़ी बोली में गद्य-रचना उपलब्ध करवाई। लेकिन सच तो ये है कि इससे पहले भी दो प्रमुख रचनाएँ लिखी जा चुकी थी। ये हैं - मुंशी सदासुखलाल 'नियाज़'- ज्ञानोपदेशवाली पुस्तक तथा इंशाअल्ला खाँ- 'रानी केतकी की कहानी'।
- इन प्रारंभिक प्रयत्नों के बावजूद हिन्दी गद्य की अखण्ड परंपरा सन् 1857 के बाद ही चल पायी। इस बीच ईसाई धर्म प्रचारक अपने मत को साधारण जनता के बीच फैलाने के लिए ईसाई धर्म पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी में कर रहे थे। आचार्य शुक्ल इस बात को जोर देकर कहते हैं कि उर्दू की जगह हिन्दी को अनुवाद के लिए ठीक समझना यह दिखाता है कि खड़ी बोली हिन्दी ही जनसाधारण की भाषा थी।